चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय

जनवरी-मार्च, 2024

न्यूज़लेटर

हकृवि ने धूमधाम से मनाया 55वां स्थापना दिवस

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के 55वें स्थापना दिवस पर विभिन्न कार्यक्रमों का भव्य रूप से आयोजन किया गया। प्रथम चरण में विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने फ्लैचर भवन के सामने स्व. चौधरी चरण सिंह जी की प्रतिमा पर माल्यापर्ण किया, जिसके बाद उन्होंने फ्लैचर भवन, कैंपस स्कूल के सभागार व पुस्तकालय के हुए नवीनीकरण परियोजनाओं और विश्वविद्यालय के मत्स्य महाविद्यालय में नई स्नात्तक प्रयोगशाला का उद्घाटन किया। इस अवसर पर उत्कृष्ट कार्यों के लिए पदमश्री व विशिष्ट सेवा मेडल प्राप्त करने वाली महान हस्तियों को कार्यक्रम में सम्मानित किया गया।

सम्मान समारोह में पदमश्री एवं विशिष्ट सेवा मेडल प्राप्त करने वाली महान हस्तियों ने अपने अनुभवों को साझा किए, जिनके संदर्भ में विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने कहा कि वैज्ञानिकों व विद्यार्थियों को इन महान विभूतियों के जीवन संघर्ष, अनुभवों व लगन से प्रेरित होकर अपने जीवन को समाज के प्रति समर्पित करने व राष्ट्र निर्माण के लक्ष्य को प्राप्त करने में अपना योगदान देने के लिए अपने आप को तैयार करना चाहिए। विश्वविद्यालय के वैज्ञानिक लगातार किसानों की आर्थिक दशा को मजबूत करने के लिए प्रयासरत है। वैज्ञानिकों द्वारा इजाद की गई उन्नत किस्में देश भर में लोकप्रिय हो रही है। जिसकी बदौलत विश्वविद्यालय लगातार राष्ट्रीय व अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर अपनी विशेष पहचान बना रहा है।

कुलपति ने कहा कि यदि विद्यार्थीगण व शोधार्थी इन महान हस्तियों के अनुभवों को अपने जीवन में धारण करते हैं तो उनको अपने लक्ष्यों की प्राप्ति करने में आसानी होगी व समाज में अपना महत्वपूर्ण योगदान दे पाएंगे।

स्थापना दिवस पर नेहरू पुस्तकालय में आयोजित दो दिवसीय पुस्तक प्रदर्शनी में विश्वविद्यालय के अलावा शहरवासियों में भी काफी उत्साह देखने को मिला। विश्वविद्यालय के स्थापना दिवस पर 4 करोड़ की लागत से फ्लैचर भवन, 2.18 करोड़ की लागत से कैंपस स्कूल के सभागार के हुए नवीनीकरण परियोजनाओं और विश्वविद्यालय के मत्स्य महाविद्यालय में 53 लाख रुपये की लागत में बनी नई स्नात्तक प्रयोगशाला का उद्घाटन किया गया।

इन महान हस्तियों को किया गया सम्मानित : विश्वविद्यालय के स्थापना दिवस पर पदमश्री व विशिष्ट सेवा मेडल प्राप्त विजेताओं के लिए सम्मान समारोह का आयोजन किया गया, जिसमें डॉ. आर. सी. सिहाग (पूर्व अधिष्ठाता, मौलिक एवं मानविकी विज्ञान महाविद्यालय) को विज्ञान-तकनीकी एवं कृषि के क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य करने, डॉ. हरिओम (विश्वविद्यालय के पूर्व कृषि विस्तार विशेषज्ञ) को प्राकृतिक खेती को बढ़ावा देने, सिरसा निवासी

अंतर्वस्तु

कृषि शिक्षा न केवल पढ़ाई बल्कि समाज सेवा का एक माध्यम - राज्यपाल श्री बंडारू दत्तात्रेय 2
कुलपति प्रो. बलदेव राज काम्बोज को उत्कृष्ट कार्यों के लिए एम.एस. स्वामीनाथन अवार्ड से नवाजा गया 3
गिरी सेंटर के प्रांगण में धूमधाम से मनाया 75वां गणतंत्र दिवस 3
हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में तीन दिवसीय 'शहरी खेती एक्सपों एवं पुष्प उत्सव 2024' आयोजित 4
हकृवि ने विकसित की गेहूं की नई किस्म डब्ल्यू एच 1402 4
सरसों की उन्नत किस्में किसानों तक पहुंचाने के लिए विश्वविद्यालय ने किया चार कंपनियों के साथ एमओयू 5
इंडक्शन ट्रेनिंग का हुआ समापन 6
हकृवि द्वारा विकसित घीया की एचबीजीएच हाईब्रिड-35 किस्म ज्यादा से ज्यादा किसानों तक पहुंचाने का प्रयास 6
हकृवि में 51वीं वार्षिक एथलेटिक मीट संपन्न 7
हकृवि की 2 छात्राओं का रक्षा अनुसंधान तथा विकास संगठन (डीआरडीओ) में हुआ चयन 7
विश्वविद्यालय को सिल्वर नैनोकण बनाने की विधि पर मिला पेटेंट 8
कृषि अधिकारी कार्यशाला (खरीफ) आयोजित 8
हकृवि की डब्ल्यू एच 1270 से देश के सर्वाधिक गेहूं उत्पादक राज्यों के किसानों को मिल रहा भरपूर लाभ 9
सांख्यिकी एवं डाटा विश्लेषण के ऑनलाइन मोड्यूल का शोध कार्यों में महत्वपूर्ण स्थान: प्रो. बी.आर. काम्बोज 10
सामुदायिक विज्ञान महाविद्यालय में सन् 1980 के पूर्व छात्राओं के लिए सम्मेलन का आयोजन 10
संक्षिप्त समाचार/संगोष्ठी/कार्यशाला/प्रशिक्षण में सहभागिता 11
सेंटर फार माइक्रोप्रोपेगेशन एंड डबल हेपलोड उत्पादन की प्रयोगशाला का उद्घाटन 12

संरक्षक

प्रो. बी.आर. काम्बोज
कुलपति

संपादक

डॉ. संदीप आर्य
मीडिया सलाहकार

मुख्य संपादक

अनुसंधान निदेशक

University Publication No.
CCSHAU/PUB#18-0026-2024-14-1

गुरविन्दर सिंह को वृद्धों, महिलाओं, अनाथ बच्चों, दुर्घटनाग्रस्त व्यक्तियों की सहायता के लिए, हरियाणवी कलाकार महाबीर सिंह गुड्डू को हरियाणवीं कला एवं संस्कृति को राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर अनूठी पहचान दिलाने, प्रगतिशील किसान करनाल स्थित नीलोखेड़ी निवासी सुल्तान सिंह भुटाना को मछली पालन को बढ़ावा देने पर पदमश्री अवार्डी हस्तियों व विशिष्ट सेवा मेडल प्राप्त मेजर जनरल प्रमोद बत्रा को भी सम्मानित किया गया।

कृषि शिक्षा न केवल पढ़ाई बल्कि समाज सेवा का एक माध्यम - राज्यपाल श्री बंडारू दत्तात्रेय

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में चांसलर-स्कॉलर इंटरेक्शन मीट का आयोजन विश्वविद्यालय के मौलिक विज्ञान एवं मानविकी महाविद्यालय में किया गया जिसमें हरियाणा के राज्यपाल एवं चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय हिसार के कुलाधिपति माननीय श्री बंडारू दत्तात्रेय मुख्यातिथि थे जबकि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने कार्यक्रम की अध्यक्षता की।

कुलाधिपति माननीय श्री बंडारू दत्तात्रेय ने विश्वविद्यालय के शोधार्थियों से उनकी शोध संबंधी प्रगति को जाना व शोध करने में आने वाली समस्याओं के बारे में पूछा। उन्होंने बताया कृषि शिक्षा न केवल पढ़ाई है बल्कि समाज सेवा का एक माध्यम है। कृषि छात्र न केवल लाभ की बल्कि जनसेवा में भी विशेष योगदान देते हैं। विश्वविद्यालय के शोधार्थियों द्वारा लगाई गई प्रदर्शनी और उनके विचार बहुत नवाचार व बहुत प्रभावी है।

उन्होंने कहा कृषि विज्ञान और प्रौद्योगिकी के आधुनिक दौर में हम सबको यह समझना चाहिए कि कृषि न केवल खेती बल्कि यह जीवन जीने का एक स्थाई तरीका है। उन्होंने विश्वविद्यालय की प्रशंसा करते हुए कहा कि विश्वविद्यालय न केवल बढ़ती जनसंख्या का भरण पोषण करने में महत्वपूर्ण योगदान दे रहा है इसके साथ ही खाद्य गुणवत्ता पर भी विशेष ध्यान दे रहा है।

उन्होंने विद्यार्थियों को संबोधित करते हुए कहा कि उन्हे इस महान विश्वविद्यालय का विद्यार्थी होने पर गर्व होना चाहिए व समाज सेवा की भावना से काम करते हुए अपने जीवन को समाज के विकास के प्रति समर्पित करना चाहिए। यह बड़े हर्ष की बात है कि विश्वविद्यालय के 146 स्नातक विद्यार्थियों ने चैक गणराज्य, आस्ट्रेलिया, न्यूजीलैंड, यूएएस, पोलैंड के विभिन्न प्रमुख संस्थानों में अंतर्राष्ट्रीय प्रशिक्षण पूरा किया है।

इस मीट से शोधार्थियों मे शिक्षा के साथ किसानों के प्रति सेवा भाव उत्पन्न होगा - कुलपति

कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने कहा कि इस चांसलर-स्कॉलर इंटरेक्शन मीट से शोधार्थियों को और अधिक केंद्रित होकर काम करने की प्रेरणा मिलेगी व किसानों से जुड़ी समस्याएं व समाज के लिए निस्वार्थ भाव से काम करने की प्रेरणा मिलेगी। विश्वविद्यालय हमेशा किसानों के हित के लिए उच्च गुणवत्ता वाले शोध करता रहा है। विश्वविद्यालय के वैज्ञानिक और शोधार्थी स्थानीय आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए अलग-अलग विभागों के साथ मिलकर शोध कार्य किए जा रहे है। पिछले तीन वर्षों में विश्वविद्यालय ने 44 किस्में विकसित व चिन्हित की है और विश्वविद्यालय द्वारा राष्ट्रीय व अन्तरराष्ट्रीय स्तर पर समझौते भी किए गए है जिनसे शोधार्थियों को फायदा हो रहा है।

कुलपति प्रो. बलदेव राज काम्बोज को उत्कृष्ट कार्यों के लिए एम.एस. स्वामीनाथन अवार्ड से नवाजा गया

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज को प्रतिष्ठित एम. एस. स्वामीनाथन अवार्ड से नवाजा गया। मध्य प्रदेश के ग्वालियर स्थित राजमाता विश्वराजे सिंधिया कृषि विश्वविद्यालय में 'वन हेल्थ वन वर्ल्ड' विषय पर आयोजित अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन में उन्हें सस्य विज्ञान क्षेत्र में एक वैज्ञानिक/विस्तार विशेषज्ञ के रूप में उनके कार्यों के लिए कनार्टक के राज्यपाल थावरचंद गहलोत ने उन्हे यह अवार्ड देकर सम्मानित किया। इस दौरान कृषि वैज्ञानिक भर्ती बोर्ड के सदस्य डॉ. बी.एस. द्विवेदी, मेजबान विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ. अरविंद कुमार शुक्ला व प्रमुख समाजसेवी श्री मोहनी मिश्रा भी मौजूद रहे। इस सम्मेलन का आयोजन एग्री-मीट फाउंडेशन व आरवीएस कृषि विश्वविद्यालय द्वारा संयुक्त रूप से किया गया था।

उल्लेखनीय है कि एम.एस. स्वामीनाथन अवार्ड के लिए एक विशेष कमेटी का गठन किया गया था। इस कमेटी की ओर से सस्य विज्ञान के क्षेत्र में शैक्षणिक, अनुसंधान, प्रौद्योगिकी विकास व विस्तार के क्षेत्रों में बेहतरीन प्रदर्शन करने पर विजेता का चयन किया गया है। इसी के फलस्वरूप कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज का चयन कर उन्हें एम.ए. स्वामीनाथन अवार्ड से सम्मानित किया गया है। प्रो. काम्बोज अंतर्राष्ट्रीय स्तर के वैज्ञानिक है और उनके अंतर्राष्ट्रीय जर्नलों, पुस्तकों और तकनीकी पत्रिकाओं में लगभग 300 शोध-पत्र व आलेख प्रकाशित हुए है। प्रो. काम्बोज का पूरे सेवाकाल के दौरान विस्तार शिक्षा का सर्वाधिक अनुभव रहा है। वे किसानों की आम समस्याओं, आवश्यकताओं और उनके आर्थिक-सामाजिक स्तर से अच्छी तरह से परिचित है। विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों के साथ सामूहिक रूप से अनुसंधान कार्य और विस्तार गतिविधियों में उनके अनुभव के आधार पर उनके द्वारा की गई कृषि सिफारिशें किसानों के लिए बहुत लाभदायक सिद्ध हुई हैं।

ग्रामीण आंचल से रखते हैं संबंध

प्रो. बलदेव राज काम्बोज का हरियाणा के करनाल जिले के दाहा गांव में 2 अप्रैल 1968 में जन्म हुआ। उनकी प्रारंभिक शिक्षा राजकीय उच्च विद्यालय, संघोहा, करनाल से हुई। इसके बाद उन्होंने चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय से स्नात्तक, स्नातकोत्तर और पीएचडी की डिग्री हासिल की। प्रो. काम्बोज आरंभ से ही प्रतिभा के धनी रहे हैं और शैक्षणिक परीक्षाओं में उनका श्रेष्ठ प्रदर्शन रहा है। वे अंतर्राष्ट्रीय प्रोजेक्ट सीआईएमएमवाईटी-आईआरआरआई-सीएसआईएसए में हरियाणा की ओर से 3 साल तक हब को-ओर्डिनेटर, सीनियर रिसर्च मैनेजर के पद को सफलतापूर्वक निभा चुके हैं। इसके अतिरिक्त उन्हें 29 साल से भी अधिक का अध्यापन, अनुसंधान और विस्तार शिक्षा गतिविधियों का अनुभव प्राप्त है।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के 20वें कुलपति के रूप में अपनी सेवाएं दे रहे हैं। वे बीते 29 सालों से इस विश्वविद्यालय में कुलसचिव सहित विभिन्न पदों पर अपनी सेवाएं दे चुके हैं। उनके कार्यकाल में विश्वविद्यालय ने शिक्षा, अनुसंधान व विस्तार के क्षेत्रों में नए-नए आयाम स्थापित किए हैं। विश्वविद्यालय ने अपने शोध व शैक्षणिक कार्यक्रमों को सुदृढ़ करने के लिए विभिन्न देशों के विश्वविद्यालयों व शोध संस्थानों के साथ समझौते, फसलों की उन्नत किस्में इजाद करने के साथ वैज्ञानिकों और विद्यार्थियों को विश्व के उच्च स्तरीय विश्वविद्यालयों में प्रशिक्षण के लिए भेजा गया है।

गिरी सेंटर के प्रांगण में धूमधाम से मनाया 75वां गणतंत्र दिवस

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के गिरी सेंटर में 75वां गणतंत्र दिवस बड़े हर्षोल्लास के साथ बड़ी धूमधाम से मनाया गया। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में बतौर विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर बी.आर. काम्बोज रहे। उनके साथ धर्मपत्नी एवं कैंपस स्कूल की निदेशिका संतोष कुमारी मौजूद रही। विभिन्न यूनिटों के मार्चपास्ट व सलामी उपरांत मुख्यातिथि प्रो. काम्बोज ने कहा कि इस बार गणतंत्र दिवस विकसित भारत और भारत लोकतंत्र की जननी थीम पर मनाया जा रहा है।

देश के हर शख्स खासतौर पर युवाओं को संकल्प लेना होगा कि वे देश को आजाद करवाने वाले शहीदों के बलिदान को सदा याद कर देश की

उन्नति में अपना भरसक योगदान दें। साथ ही देश के प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी के सपने 2047 तक भारत को विकसित बनाना की साथ साकारात्मक ऊर्जा एवं सोच के साथ आगे बढने का संकल्प लें। उन्होंने गणतंत्र दिवस को एकता, सद्भावना और समानता का प्रतीक बताया।

उन्होंने मातृशक्ति एवं महिलाशक्तिकरण का जिक्र करते हुए हर क्षेत्र में महिलाओं की भूमिका को देश के उत्थान में अहम योगदान बताया।

उन्होंने युवाओं से आह्वान किया कि वे मानसिक, शारीरिक एवं बौद्धिक रूप से स्वस्थ रहने के लिए हर गतिविधियां जिनमें शैक्षणिक-गैरशैक्षणिक व खेलों में बढ़-चढकर भाग लेना चाहिए।

हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में तीन दिवसीय 'शहरी खेती एक्सपों एवं पुष्प उत्सव 2024' आयोजित

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के एग्री-टूरिज्म सेंटर व बोटेनिकल गार्डन में आयोजित तीन दिवसीय 'शहरी खेती एक्सपों एवं पुष्प उत्सव-2024' का आयोजन किया गया। कार्यक्रम के पहले दिन विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने इसका शुभारंभ किया। उन्होंने कहा कि फूल प्रकृति का खूबसूरत तोहफा है, जिसे सभी पसंद करते हैं। क्योंकि फूल निस्वार्थ भाव से अपनी महक दूसरों तक पहुंचाते है। साथ ही जीवन की थकान को सुकून में बदलकर हमारा ध्यान अपनी ओर खींचते हैं। उन्होंने कहा कि 'शहरी खेती एक्सपों एवं पुष्प उत्सव-2024' हरियाणा वासियों के लिए खास है क्योंकि इसमें फूलों व सब्जियों को उगाने के लिए उपयोग में लाई जा रही नई-नई तकनीकों, नवाचारों, प्रौद्योगिकियों व प्रबंधनों से युवाओं व किसानों को अवगत करना है। साथ ही आमजन के लिए खास यह है कि कम जगह, बिना मिट्टी व कम पानी उपलब्ध होने के बावजूद वर्टिकल खेती, हाइड्रोपोनिक जैसे नए प्रबंधनों की मदद से हम घर में भी फल-सब्जियां उगा सकते हैं। यह सरल व सहज विधि है, जिसकी मदद से हम घर के बाहर किसी छोटे से बगीचे, छत पर या बालकनी पर यह विधि अपनाकर फूल-सब्जियां प्राप्त कर सकते हैं। साथ ही कमरे के अंदर वर्टिकल गार्डन भी बना सकते हैं। इतना ही नहीं कमरे के अंदर एलईडी लाइटों से फल-सब्जियां उगाई जा सकती है।

'शहरी खेती एक्सपों एवं पुष्प उत्सव-2024' के दूसरे दिन हरियाणा सरकार में डिप्टी स्पीकर रणबीर सिंह गंगवा ने इस कार्यक्रम में बतौर मुख्यातिथि शिरक्त की। उन्होंने हकृवि के वैज्ञानिकों द्वारा शोध व प्रौद्योगिकियों द्वारा कृषि के क्षेत्र में इजाद की गई नई-नई तकनीकों, नवाचारों व उन्नत फसलों की किस्मों को प्रदर्शित करने पर प्रशंसा की। उन्होंने कहा कि विश्वविद्यालय के वैज्ञानिक कृषि को बढ़ावा देने का काम कर रहे हैं। इस उत्सव में दिखाई गई प्रदर्शनियों से किसान और युवा पीढ़ी नई तकनीकों की मदद से खाली जगह को भी फल व सब्जियों को उगाने में इस्तेमाल में ला सकते हैं। डिप्टी स्पीकर ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी द्वारा विकसित भारत संकल्प यात्रा का जिक्र करते हुए कहा कि 2047 तक भारत देश को विकसित बनाना है, जिसके लिए यह मुहिम चलाई जा रही है। इसी मुहिम को चरितार्थ करने पर विश्वविद्यालय भी अपनी अग्रणीय भूमिका अदा कर रहा है।

वहीं 'शहरी खेती एक्सपों एवं पुष्प उत्सव 2024' के समापन अवसर पर हिसार सेना छावनी के कमांडर एवं ब्रिगेडियर एस. राजीव मुख्यातिथि रहे। इस दौरान उनके साथ हिसार सेना छावनी से लेफ्टिनेंट कर्नल शशांक मिश्रा व श्वेता श्रीवास्तवा, एडजुटेंट और क्वार्टर मास्टर मेजर आरसी सूयाल और लेफ्टिनेंट दीपक यादव भी मौजूद रहे। ब्रिगेडियर एस. राजीव ने कहा कि फूलों का मानव जीवन में विशेष महत्व है। फूलों की विभिन्न वैरायटी देखकर मन प्रसन्न हो जाता है। उत्सव के अंतिम दिन लोगों ने सुंदर-सुंदर फूलों के साथ अपनी सेल्फी खिंचवाई। इस दौरान लोगों के लिए सेल्फी प्वाइंट भी आकर्षण का केंद्र रहा।

हकृवि ने विकसित की गेहूं की नई किस्म डब्ल्यू एच 1402

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के गेहूं एवं जौ अनुभाग के द्वारा दो पानी व मध्यम खाद में अधिक उपज देने वाली गेहूं की एक नई किस्म डब्ल्यू एच 1402 ईजाद की गई है। यह किस्म भारत के उत्तर पश्चिमी मैदानी भाग के लिए चिन्हित की गई है, जिसमें पंजाब, हरियाणा, राजस्थान, दिल्ली, हिमाचल प्रदेश, उत्तराखंड व जम्मू-कश्मीर का मैदानी भाग आता है।

विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने यह जानकारी देते हुए बताया कि विश्वविद्यालय के गेहूं एवं जौ अनुभाग के वैज्ञानिकों की टीम ने गेहूं की एक नई किस्म डब्ल्यू एच 1402 विकसित की है। इस किस्म की दो पानी में ही औसत उपज 50 क्विंटल प्रति हैक्टेयर व अधिकतम उपज 68 क्विंटल प्रति हैक्टेयर तक ली जा सकती है। उन्होंने बताया कि यह किस्म पीला रतुआ, भुरा रतुआ व अन्य बीमारियों के प्रति रोगरोधी है। साथ ही यह किस्म कम पानी वाले जोन की अच्छी किस्म एनआईएडब्ल्यू 3170 से 7.5 प्रतिशत अधिक पैदावार देती है।

डब्ल्यू एच 1402 की बिजाई का उचित समय व बीज की मात्रा : गेहूं की एक नई किस्म डब्ल्यू एच 1402 किस्म की बिजाई का उचित समय अक्तूबर के अंतिम सप्ताह से नवंबर का पहला सप्ताह है तथा

बीज की मात्रा 100 किलोग्राम प्रति हैक्टेयर है। इस किस्म को दो पानी जिसमें पहला पानी बीजाई के 20-25 दिन बाद शिखर जड़े निकलते समय व दूसरा पानी बीजाई के 80-85 दिन बाद बालियां निकलते समय देने की जरूरत है।

गेहूं की नई किस्म डब्ल्यू एच 1402 किस्म की विशेषताएं : गेहूं एवं जौ अनुभाग के प्रभारी डॉ. पवन ने बताया कि गेहूं की नई किस्म डब्ल्यू एच 1402 किस्म 100 दिन में बालियां निकालती है तथा 147 दिन में पककर तैयार हो जाती है। इस किस्म की बालियां लंबी (14 सेंटीमीटर) व लाल रंग की है।

इस किस्म की ऊंचाई 100 सेंटीमीटर है, जिससे इसके गिरने का खतरा न के बराबर है। इस किस्म का दाना मोटा है। इसमें 11.3 प्रतिशत प्रोटीन, हेक्टोलीटर वेट (77.7 केजी/एचएल) लोह तत्व (37.6 पीपीएम), जिंक (37.8 पीपीएम) है। अत: पौष्टिकता के हिसाब से यह किस्म अच्छी है।

गेहूं एवं जौ अनुभाग के इन वैज्ञानिकों की मेहनत का है परिणाम : विश्वविद्यालय के गेहूं एवं जौ अनुभाग के वैज्ञानिकों की टीम ने गेहूं की एक नई किस्म डब्ल्यू एच 1402 विकसित की है। इस टीम में डॉ. एम.एस. दलाल, ओपी बिश्नोई, विक्रम सिंह, दिव्या फोगाट, योगेन्द्र कुमार, एसके पाहुजा, सोमवीर, आरएस बेनीवाल, भगत सिंह, रेणु मुंजाल, प्रियंका, पूजा गुप्ता व पवन कुमार का इस किस्म को विकसित करने में अहम योगदान रहा।

सरसों की उन्नत किस्में किसानों तक पहुंचाने के लिए विश्वविद्यालय ने किया चार कंपनियों के साथ एमओयू

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय द्वारा विकसित सरसों की उन्नत किस्में न केवल हरियाणा बल्कि देश के अन्य प्रदेशों के किसानों के लिए काफी फायदेमंद साबित होगी। इसके लिए विश्वविद्यालय ने नेशनल क्रॉप साइंस, बीकानेर (राजस्थान), माई किसान एग्रो निमच (मध्यप्रदेश), फेम सिड्स (इंडिया) व उत्तम सिड्स हिसार के साथ तकनीकी व्यवसायीकरण को बढ़ावा देने के लिए समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए है।

विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने कहा कि जब तक विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों द्वारा किए गए शोध किसानों तक नहीं पहुंचेगा तब तक उसका कोई लाभ नहीं है। इसलिए इस तरह के समझौतों से विश्वविद्यालय का प्रयास है कि यहां विकसित उन्नत फसल किस्मों व तकनीकों को अधिक से अधिक किसानों तक पहुंचाया जा सकें। कुलपति ने बताया कि विश्वविद्यालय द्वारा विकसित सरसों की किस्म आरएच 1424 समय पर बुवाई और बारानी परिस्थितियों में खेती के लिए उपयुक्त है, जबकि आरएच 1706 एक मूल्य वर्धित किस्म है। कुलपति ने बताया कि हरियाणा पिछले कई वर्षों से सरसों फसल की उत्पादकता के मामले में देश में शीर्ष स्थान पर है। यह मुकाम विश्वविद्यालय में सरसों की अधिक उपज देने वाली किस्मों के विकास तथा किसानों द्वारा उन्नत तकनीकों को अपनाने के कारण ही संभव हुआ है। अब तक यहां अच्छी उपज क्षमता वाली सरसों की कुल 21 किस्मों को विकसित किया गया है।

एक साथ चार कंपनियों के साथ हुआ समझौता : कुलपति प्रो. काम्बोज की उपस्थिति में विश्वविद्यालय की ओर से समझौता ज्ञापन पर कृषि महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ. एस.के. पाहुजा ने हस्ताक्षर किए। राजस्थान स्थित बीकानेर की नेशनल क्रॉप साइंस सरसों की किस्म आरएच 1424 के लिए समझौता ज्ञापन पर कंपनी की तरफ से राजेश पूनियां ने हस्ताक्षर किए है। मध्य प्रदेश स्थित निमच की माई किसान एग्रो के साथ सरसों की किस्म आरएच 1706 के लिए समझौता ज्ञापन पर कंपनी की ओर से सीईओ जसवंत सिंह ने हस्ताक्षर किए है। हिसार की दो कपंनियां, जिनमें फेम सिड्स (इंडिया) के साथ सरसों की किस्मों आरएच 1706 व आरएच 1424 के लिए समझौता ज्ञापन पर कंपनी की तरफ से हिमांशु बंसल व शुभम ने हस्ताक्षर किए है।

यह है सरसों की किस्मों की विशेषताएं : बारानी परीक्षणों में नव विकसित किस्म आरएच 1424 में लोकप्रिय किस्म आरएच 725 की तुलना में 14 प्रतिशत की वृद्धि के साथ 26 क्विंटल प्रति हेक्टेयर की औसत बीज उपज दर्ज की गई है।

यह किस्म 139 दिनों में पक जाती है और इसके बीजों में तेल की मात्रा 40.5 प्रतिशत होती है। सरसों की दूसरी किस्म आरएच 1706 में 2.0 प्रतिशत से कम इरूसिक एसिड होने के साथ इसके तेल की गुणवत्ता में सुधार हुआ है जिसका उपभोक्ताओं के स्वास्थ्य को लाभ होगा। इसकी औसत बीज उपज 27 क्विंटल हेक्टेयर है। इसके बीजों में 38 प्रतिशत तेल की मात्रा होती है।

इंडक्शन ट्रेनिंग का हुआ समापन

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के मानव संसाधन प्रबंधन निदेशालय में एक माह के इंडक्शन ट्रेनिंग कोर्स का समापन समारोह आयोजित किया गया, जिसमें मुख्य अतिथि के रूप में विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज रहे। यह कोर्स नवनियुक्त शिक्षकों व वैज्ञानिकों के लिए आयोजित किया गया।

मुख्यातिथि प्रो. काम्बोज ने कहा कि शिक्षण संस्थानों की प्रतिष्ठा फैकल्टी की योग्यता व कौशल पर निर्भर करती है। किसी भी शिक्षण संस्थान को राष्ट्रीय व अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर सम्मान दिलाने में फैकल्टी का महत्वपूर्ण योगदान होता है। उन्होंने फैकल्टी से अपने ज्ञान को अपडेट रखने व ईमानदारी से अपना कर्तव्य निभाने का आह्वान किया। उन्होंने कहा कि शिक्षा क्षेत्र में तेजी से बदलाव आ रहे हैं। ये बदलाव नई तकनीकें, प्रौद्योगिकियों व शोध का परिणाम है। इन्हें अधिक से अधिक अपनाना समय की मांग भी है। मुख्यातिथि ने आह्वान किया कि नवनियुक्त शिक्षकों व वैज्ञानिकों को इन्हें अपनाने के साथ-साथ अपने कौशल व व्यक्तित्व का विकास करें तो निश्चित रूप से हमारा शिक्षण संस्थान ऊंची बुलंदियों को छूकर अपनी अनूठी पहचान बनाएगा। उन्होंने प्रतिभागियों से कहा कि वे प्रशिक्षण से प्राप्त जानकारियों के माध्यम से नए-नए आइडिया, शोध व प्रोजेक्ट तैयार करें ताकि किसानों से प्रत्यक्ष रूप से जुड़कर उनकी आर्थिक स्थिति को मजबूत बनाया जा सकें।

हकृवि द्वारा विकसित घीया की एचबीजीएच हाईब्रिड-35 किस्म ज्यादा से ज्यादा किसानों तक पहुंचाने का प्रयास : प्रो. बी.आर. काम्बोज

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय द्वारा विकसित घीया की संकर किस्म एचबीजीएच हाईब्रिड-35 किस्म ज्यादा से ज्यादा किसानों तक पहुंचाने के लिए प्रयासरत है, जिससे कि किसान न केवल इस किस्म की अच्छी पैदावार पा सकते हैं अपितु अच्छी आमदनी प्राप्त कर अपनी आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ भी कर सकते हैं। इसी कड़ी में चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय और इंडियन फार्म फॉरेस्ट्री डेवलेपमेंट को-ऑपरेटिव लिमिटेड (आईएफएफडीसी), हिसार के बीच एमओयू हुआ।

कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज की उपस्थिति में विश्वविद्यालय के कृषि महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ. एस.के.पाहुजा और इंडियन फार्म फॉरेस्ट्री डेवलेपमेंट को-ऑपरेटिव लिमिटेड, दिल्ली के एमडी एस.पी सिंह ने इस एमओयू पर हस्ताक्षर किए है। इस दौरान इंडियन फार्म फॉरेस्ट्री डेवलेपमेंट को-ऑपरेटिव लिमिटेड, हिसार के डीजीएम मांगेराम भी मौजूद रहे।

इस अवसर पर इंडियन फार्म फॉरेस्ट्री डेवलेपमेंट को-ऑपरेटिव लिमिटेड, दिल्ली के एमडी एस.पी सिंह ने कहा कि चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय किसानों से सीधे तौर से जुड़कर उनके उत्थान में अग्रणी भूमिका निभा रहा है। विश्वविद्यालय द्वारा विकसित घीया की एचबीजीएच हाईब्रिड-35 के बीजों को खेत में बोने के बाद इसके फल पहली तुड़ाई के लिए लगभग 55 दिन बाद मंडी में आ जाती है। खास बात यह है कि इस किस्म के फलों का आकार बेलनाकार होने के कारण इसको काफी पसंद किया जाता है।

घीया की एचबीजीएच हाईब्रिड-35 की ये है विशेषताएं : सब्जी विज्ञान विभाग के अध्यक्ष डॉ. एस.के.तेहलान ने बताया कि विश्वविद्यालय द्वारा विकसित घीया की एचबीजीएच हाईब्रिड-35 की औसतन पैदावार बारिश एवं गर्मी के मौसम में 300-310 क्विंटल प्रति हैक्टेयर आंकी गई है। उपरोक्त किस्म की घीया लंबाई में मध्यम, फलों का छिलका पतला एवं मुलायम होता है। साथ ही इसके फल हल्के हरे रंग में बेलनाकार आकार के होते हैं और इन्हें पकाने में भी कम समय लगता है।

हकृवि में 51वीं वार्षिक एथलेटिक मीट संपन्न

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में चल रहे तीन दिवसीय 51वीं वार्षिक एथलेटिक मीट प्रतियोगिता संपन्न हुई। एथलेटिक्स प्रतियोगिता में एग्रीकल्चर कालेज, हिसार ने पुरुष वर्ग में व कॉलेज ऑफ कम्युनिटी साइंस ने महिला वर्ग में चौम्पियनशिप ट्राफी जीती। ओवरऑल चौम्पियन पुरूष वर्ग में एग्रीकल्चर कालेज, हिसार व महिला वर्ग में कॉलेज ऑफ कम्युनिटी साइंस रहा। बेस्ट एथलीट महिला वर्ग में कॉलेज ऑफ बेसिक साइंस की छात्रा अनिता व पुरूष वर्ग में छात्र अंकित बेस्ट एथलीट रहे। इन दोनों खिलाडियों को डॉ. सत्य प्रकाश आर्य ने सर्वश्रेष्ठ खिलाड़ी की ट्राफी प्रदान की गई। प्रतियोगिता के समापन अवसर पर आज विशेष कार्यक्रम का आयोजन किया गया, जिसमें मुख्यातिथि के रूप में विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज रहे, जबकि विशिष्ट अतिथि के रूप में लुवास के कुलपति विनोद कुमार वर्मा उपस्थित रहे।

विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने अपने संबोधन में खेलों का जीवन में महत्व बताते हुए कहा कि खेलों से न कि हम शारीरिक व मानसिक रूप से स्वस्थ रहते हैं अपितु यह हमारे जीवन में नई उमंग भी भरते हैं। साथ ही यह हर आयु वर्ग के लोगों को एक मंच पर लाकर एक-दूसरे को जानने के साथ-साथ आपसी मनमुटाव को भी दूर करता है। भागदौड़ की जिंदगी में स्वयं को स्वस्थ रखने का सबसे सुगम माध्यम खेल है। कुलपति ने कहा कि विश्वविद्यालय ने मेधावी विद्यार्थियों के साथ-साथ बेहतरीन खिलाड़ी भी तैयार किए है, जिन्होंने राष्ट्रीय व अंतर्राष्ट्रीय पटल पर विश्वविद्यालय व परिवार का नाम रोशन किया है। मुख्यातिथि ने कहा कि खेल हमें ऐसा वातावरण प्रदान करता है, जिससे सभी का समान रूप से सामूहिक विकास होता है। उन्होंने उपस्थित अधिकारीगणों, शिक्षकगणों व खिलाडियों से आह्वान किया कि वे रोजमर्रा जीवन में खेलों को जरूर शामिल करें, जिससे हम शारीरिक व मानसिक रूप से स्वस्थ भी रहेंगे, साथ ही एक-दूसरे से परंस्पर मधुर संबंध स्थापित करने का अवसर भी मिलेगा।

हकृवि की 2 छात्राओं का रक्षा अनुसंधान तथा विकास संगठन (डीआरडीओ) में हुआ चयन

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय हिसार के मौलिक विज्ञान एवं मानविकी महाविद्यालय की दो छात्राएं सोनम सिहाग और निधि शर्मा का रक्षा अनुसंधान तथा विकास संगठन (डीआरडीओ) में वैज्ञानिक पद पर चयन हुआ है। छात्रा सोनम सिहाग बायोकेमिस्ट्री विषय तथा छात्रा निधि शर्मा माइक्रोबायोलॉजी विषय में पीएचडी की पढ़ाई कर रही हैं तथा जल्दी ही ये दोनों छात्राएं अपनी पीएचडी की डिग्री पूरी कर लेंगी। विश्वविद्यालय की इन छात्राओं का चयन व्यक्तिगत इंटरव्यू के आधार पर हुआ है।

चयनित छात्राओं की इस उपलब्धि पर विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने बधाई देते हुए उनके उज्जवल भविष्य की कामना की। कुलपति ने बताया कि चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय विश्व स्तर के विश्वविद्यालयों में शुमार है क्योंकि न केवल यहां के विद्यार्थी विदेशों में पढ़ाई के लिए जाते हैं बल्कि विदेशी छात्र भी पढ़ाई के लिए यहां आते हैं। उन्होंने कहा शिक्षकों द्वारा दिया गया मार्गदर्शन व विद्यार्थियों का प्रयास निरंतर विश्वविद्यालय को नित्त नई ऊंचाइयों पर ले जा रहा है।

शिक्षकों के मार्गदर्शन का रहा विशेष योगदान : दोनो विद्यार्थियों ने अपनी इस सफलता का श्रेय अपने माता पिता व शिक्षकों को दिया। गौरतलब है कि छात्रा सोनम सिहाग बायोकेमिस्ट्री में डेवलेप्लमेंट एंड इवेलेशन ऑफ इन बॉयनोकराईस्ट्रल फॉर विट एंड पिर्लर मिलेट् ग्राउन अंडर इन डिविसियंट एंड इन सियुफिशियंट कंडिशन विषय पर डॉ. अजय पाल के मार्गदर्शन में पीएचडी में शोध कर रही है, जबकि छात्रा निधि शर्मा माइक्रोबायोलश्वजी में बाओडीग्रेडेबल प्लास्टिक प्रोडेक्शन बाई बेक्टीरिया यूजिंग लो कॉस्ट सबस्ट्रेक विषय पर डॉ. बलजीत सिंह सहारण के सानिध्य में पीएचडी में शोध कर रही हैं।

विश्वविद्यालय को सिल्वर नैनोकण बनाने की विधि पर मिला पेटेंट

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय को मुलेठी (वेरायटी एचएम-1) का उपयोग करके सिल्वर नैनोकण बनाने की विधि पर भारतीय पेटेंट कार्यालय द्वारा पेटेंट प्रदान किया गया है। इस विधि को विश्वविद्यालय के आणविक जीव विज्ञान, जैव प्रौद्योगिकी और जैव सूचना विज्ञान विभाग (एम.बी.बी.एंड बी) की पूर्व विभागाध्यक्षा डॉ. पुष्पा खरब के नेतृत्व में उनके पीएचडी शोधार्थियों डॉ. कनिका रानी और डॉ. निशा देवी ने विकसित किया है। इस विधि को पेटेंट अधिनियम 1970 के अंतर्गत 20 वर्ष की अवधि के लिए 486872 संख्या से पेटेंट अनुदत किया गया है।

निमेटोड को नियन्त्रण करने में कारगर साबित होंगे सिल्वर नैनोकण: प्रो. बी.आर. काम्बोज: विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने यह जानकारी देते हुए कहा कि पॉलीहाऊस, ग्रीनहाउस, बागवानी व सब्जियों में रूट नॉट निमेटोड (जड़-गांठ सूत्रकृमि) के संक्रमण से बहुत अधिक नुकसान देखा गया है। पॉलीहाउस में नियंत्रित पर्यावरणीय परिस्थितियों के कारण निमेटोड की आबादी में वृद्धि हो जाती है और इनकी अत्याधिक संक्रमण दर के कारण कोई फसल नहीं उग पाती है।

जिसकी वजह से किसानों को भारी आर्थिक नुकसान उठाना पड़ता है। इसलिए हमने मुलेठी द्वारा निर्मित इन सिल्वर नैनोकणों को रूट नॉट निमेटोड पर टेस्ट किया। इस कार्य के लिए सूत्रकृमि विभाग के वैज्ञानिक डॉ. प्रकाश बानाकर का सहयोग लिया गया। शोधार्थियों ने यह जांच पहले लैब में, फिर स्क्रीन हाऊस में की, दोनों ही केस में मुलेठी द्वारा निर्मित सिल्वर नैनोकण रूट नॉट निमेटोड को मारने में सक्षम पाए गए, इससे संबंधित और शोध कार्य जारी है।

प्रो. काम्बोज ने बताया कि कमर्शियल केमिकल नेमैटिसाइड (वाणिज्यिक रासायनिक सूत्रकृमिनाशक) की तुलना में मुलेठी द्वारा निर्मित सिल्वर नैनोकणों की बहुत कम मात्रा ही सूत्रकृमिनाशक के रूप में पर्याप्त पाई गई। इसलिए इन सिल्वर नैनोकणों को विभिन्न कृषि फसलों के लिए उपयोग किया जा सकता है। विश्वविद्यालय द्वारा इजाद की गई सिल्वर नैनोकण बनाने की यह विधि प्रभावी, किफायती और स्थिर है। यह सिल्वर नैनोकण एक साल से अधिक समय तक स्थिर पाए गए है। इन नैनोकणों में नेमैटिसाइडल (सूत्रकृमिनाशक) क्षमता की जांच इन विट्रो व इन विवो स्थितियों में भी की गई थी।

मुलेठी द्वारा निर्मित सिल्वर नैनोकणों के फायदे: पौधों के इस्तेमाल से नैनो कणों को बनाने की विधि में केमिकल्स का कम उपयोग होता है और कोई अतिरिक्त जहरीला अवशेष भी नहीं बनता है।

मुलेठी के इस्तेमाल से बनाए गए हमारे सिल्वर नैनोकण निमेटोड को मारने में सक्षम पाए गए है। किसान मुलेठी आधारित इन सिल्वर नैनो कणों का उपयोग निमेटोड संक्रमण को नियंत्रित करने के लिए कर सकता है, जिसकी वजह से लगभग सभी खेती वाली फसलों की उपज और गुणवत्ता को गंभीर नुकसान पहुंचता है।

कृषि अधिकारी कार्यशाला (खरीफ) आयोजित

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कृषि महाविद्यालय में आयोजित दो दिवसीय कृषि अधिकारी कार्यशाला (खरीफ) 2024 का आयोजन हुआ। कार्यशाला में मुख्यातिथि के रूप में विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज रहे, जबकि अतिरिक्त निदेशक, कृषि व किसान कल्याण विभाग, हरियाणा डॉ. रोहताश राड़ कार्यशाला में विशिष्ट अतिथि के रूप में मौजूद रहे। क्षेत्रीय अनुसंधान निदेशक डॉ. राजबीर गर्ग एवं कृषि विज्ञान केंद्र, महेंद्रगढ़ के वरिष्ठ संयोजक डॉ. रमेश यादव ने रिपोर्टियर की भूमिका निभाई।

मुख्यातिथि प्रो. बी.आर. काम्बोज ने कार्यशाला को संबोधित करते हुए कहा कि कृषि अधिकारी एवं विस्तार शिक्षा विशेषज्ञ समग्र सिफारिशों को जल्दी से जल्दी किसानों तक पहुंचाए ताकि आगामी खरीफ सीजन में उन्हें लागू करवाकर फसल उत्पादन में बढ़ोतरी की जा सकें। उन्होंने कहा कि उन्नत किस्मों के गुणवत्तापूर्ण बीज के उत्पादन को बढ़ाने के लिए विश्वविद्यालय विभिन्न सरकारी एवं निजी क्षेत्रों की कंपनियों के साथ समझौते कर रहा है ताकि विश्वविद्यालय द्वारा विकसित उन्नत किस्मों का बीज जल्दी से जल्दी किसानों को उपलब्ध करवाया जा सकें। अतिरिक्त निदेशक, कृषि व किसान कल्याण विभाग, हरियाणा डॉ. रोहताश राड़ ने आने वाले खरीफ सीजन में सीधी बिजित धान के अंतर्गत क्षेत्रफल बढ़ाने व फसलों के अवशेष न जलाने के बारे में बड़े स्तर पर जागरूकता अभियान चलाने पर बल दिया। उन्होंने संबंधित विभाग द्वारा किसानों के हित में चलाई जा रही योजनाओं की विस्तारपूर्वक जानकारी दी।

कार्यशाला में खरीफ मौसम की फसलों पर निम्नलिखित 11 सिफारिशें स्वीकृत की गई

- मूंग की एक किस्म एम.एच. 1762 तथा चारे वाली ज्वार की दो किस्में, जिसमें सी. एस.वी. 53 एफ, एच.जे.1514 एवं चारे वाली ज्वार की एक हाईब्रिड किस्म एच.जे. एच.1513 को खरीफ फसलों की समग्र सिफारिशों में शामिल किया गया।
- कपास की फसल में टपका सिंचाई की समय-सारिणी की सिफारिश
- जलवायु परिवर्तन के परिपेक्ष्य में एक हैक्टेयर के लिए समेकित कृषि प्रणाली मॉडल की सिफारिश
- खरीफ सीजन में मक्का को चारे की फसल के रूप में उगाने हेतु समग्र सिफारिश
- सीधी बिजित धान में मिश्रित खरपतवार नियंत्रण के लिए पिनोक्सूलम 1 प्रतिशत .पेंडिमेथलीन 24 प्रतिशत (पीईपीई 25 प्रतिशत एसई) 1000 मि.ली प्रति एकड़ की दर से 200 लीटर पानी में घोल बनाकर बिजाई के 0 से 3 दिन बाद नम मिट्टी में छिडकाव करें।
- धान की फसल में फुटाव व उपज बढ़ाने के लिए 4 किलोग्राम माइकोराइजा (केमैक्स एनर्जी) की तीन बराबर विभाजित खुराक को रोपाई के 15 दिन बाद, फुटाव और बालियां निसरने की अवस्था पर प्रति एकड़ की दर से छींटा विधि से छिड़काव करें।
- धान की सीधी बिजाई में तना छेदक कीट नियंत्रण के लिए 6 मि.ली. (3.75 ग्राम एक्टिव इनग्रेडिएंट) क्लोरेनट्रेनिलीप्रोल 50 प्रतिशत एफएस (625 ग्राम प्रति लीटर एफएस) (लुमिविआ) को पानी में मिलाकर 25 मि.ली. घोल को प्रति किलो बीज की दर से उपचार करने के बाद छाया में सूखाकर बिजाई करें।
- मक्के की फसल में धारीदार पर्ण एवं पर्णच्छद अंगमारी रोग के नियंत्रण को प्रभावी बनाने के लिए 30-35 दिन पुरानी फसल में पौधों की निचली 2-3 पत्तियों को तोड़ने की सिफारिश।

हकृवि की डब्ल्यू एच 1270 से देश के सर्वाधिक गेहूं उत्पादक राज्यों के किसानों को मिल रहा भरपूर लाभ : प्रो. बी.आर. काम्बोज

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय द्वारा विकसित गेहूं की डब्ल्यू एच 1270 की उन्नत किस्म किसानों के लिए काफी फायदेमंद साबित हो रही है। क्योंकि यह किस्म गेहूं की अधिक पैदावार तो बढ़ाती है साथ ही गेहूं की मुख्य बीमारियां जैसे पीला रत्तवा व भूरा रत्तवा के प्रति रोगरोधी क्षमता से भी परिपूर्ण है। इन्हीं गुणों के साथ गेंहूं की डब्ल्यू एच 1270 की उन्नत किस्म हरियाणा के साथ-साथ देश के सर्वाधिक गेहूं उत्पादक राज्यों के किसानों को भी भरपूर फायदा मिल रहा है। ये विचार विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने कंपनियों से समझौते के दौरान कही। किसानों की आर्थिक स्थिति को और मजबूत बनाने के लिए विश्वविद्यालय ने जगदीश हाईब्रिड सीड्स कंपनी, सुपर सीड्स, हिसार, यमुना सीड्स, इंद्री व गोपाल सीड्स फार्म, मानसा से समझौता किया है।

विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने कहा कि उन्नत किस्म डब्लयू एच 1270 की पैदावार व रोग प्रतिरोधक क्षमता को देखते हुए इसकी मांग अन्य राज्यों में भी लगातार बढ़ती जा रही है। विश्वविद्यालय के अनुवांशिकी एवं पौध प्रजनन विभाग के गेहूं अनुभाग द्वारा विकसित गेहूं की किस्म डब्ल्यू एच 1270 को भारत के उत्तर पश्चिमी मैदानी भाग के सिंचित क्षेत्र में अगेती बिजाई वाली खेती के लिए वरदान साबित हो रही है। इसकी मांग पंजाब, हरियाणा, दिल्ली, राजस्थान और पश्चिमी उत्तरप्रदेश, जम्मू-कश्मीर, हिमाचल प्रदेश और उत्तराखण्ड में लगातार बढ़ती जा रही है। कुलपति ने कहा कि यह वैज्ञानिकों की मेहनत का ही परिणाम है कि हरियाणा प्रदेश क्षेत्रफल की दृष्टि से अन्य प्रदेशों की तुलना में बहुत ही छोटा है जबकि देश के केंद्रीय खाद्यान भण्डारण में प्रदेश का कुल भण्डारण का लगभग 16 प्रतिशत हिस्सा है और फसल उत्पादन में अग्रणी प्रदेशों में है।

एक साथ चार कंपनियों के साथ हुआ समझौता, अभी तक हो चुके हैं कुल 35 समझौते : मानव संसाधन प्रबंधन निदेशक डॉ. मंजू महता ने बताया कि विश्वविद्यालय की ओर से एक साथ चार कंपनियों के साथ समझौते हुए, जिनमें कुलपति प्रो. काम्बोज की उपस्थिति में विश्वविद्यालय की ओर से समझौता ज्ञापन पर कृषि महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ. एस. के.पाहुजा ने हस्ताक्षर किए, जबकि जगदीश हाईब्रिड सीड्स कंपनी की ओर से नमन मित्तल और प्रबंधक महावीर, सुपर सीड्स, हिसार के निदेशक अंकित गर्ग, यमुना सीड्स, इंद्री के पार्टनर रमन कुमार और गोपाल सीड्स फार्म, मानसा के प्रबंधक संदीप कुमार ने समझौते पर हस्ताक्षर किए। ज्ञात रहे कि विश्वविद्यालय ने गेहूं की डब्ल्यू एच 1270 की उन्नत किस्म किसानों तक पहुंचाने के लिए कुल 35 कंपनियों से समझौते किए है।

सांख्यिकीय डाटा के विश्लेषण के लिए ऑनलाइन मॉड्यूल तैयार करने पर मिले चार कॉपीराइट

सांख्यिकीय डाटा के लिए तैयार ऑनलाइन मॉड्यूल नवाचार को बढ़ावा व वैश्विक शोध कार्यों में महत्वपूर्ण योगदान देंगे। डाटा विश्लेषण के मॉड्यूल शोधार्थियों को भविष्य की चुनौतियों से निपटने के लिए सक्षम बनाएंगे। सांख्यिकीय डाटा के विश्लेषण के लिए निर्मित ऑनलाइन मॉड्यूल का प्रयोग दुनिया भर में अनुसंधान डाटा के विश्लेषण के लिए किया जा सकता है, जो वैज्ञानिकों व शोधकर्ताओं के लिए अत्याधिक लाभदायक साबित होगा।

ये विचार चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने कहे। उन्होंने बताया कि गणित और सांख्यिकी विभाग द्वारा सांख्यिकीय डाटा के विश्लेषण के लिए ऑनलाइन मॉड्यूल तैयार करने पर चार कॉपीराइट प्रदान किए गए है। ये मॉड्यूल संवैधानिक अनुसंधान के व्यवहारिक अनुप्रयोग को प्रदर्शित करते हुए प्रजनन कार्यक्रमों में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएंगे। उन्होंने इस उपलब्धि पर शामिल वैज्ञानिकों को बधाई दी। ऑनलाइन सांख्यिकीय विश्लेषण प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में लगातार नए मानक स्थापित करने के लिए गणित और सांख्यिकी विभाग की सराहना की।

मौलिक विज्ञान एवं मानविकी महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ. नीरज कुमार ने कहा कि ये ऑनलाइन मॉड्यूल गणित और सांख्यिकी विभाग के डॉ. ओ.पी श्योराण व डॉ. विनय कुमार अहलावत ने विकसित किए, जोकि अनुसंधान डाटा के विश्लेषण के क्षेत्र में यह मॉड्यूल महत्वपूर्ण योगदान देंगे।

सामुदायिक विज्ञान महाविद्यालय में सन् 1980 के पूर्व छात्राओं के लिए सम्मेलन का आयोजन

अगर हमें जीवन के सही पथ पर चलाने वाला अच्छा मार्गदर्शक मिल जाए, तो निश्चित तौर पर हम सफल होंगे। इसमें पूर्व विद्यार्थी सही मार्गदर्शक की भूमिका निभा सकते है। क्योंकि पूर्व विद्यार्थियों के पास ज्ञान, अनुभव व कौशल होता है, जिसकी मदद से वर्तमान समय में पढ़ रहे विद्यार्थी अपनी प्रतिभा को निखार कर सर्वांगिण विकास कर सकें। ये विचार चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने व्यक्त किए। वे विश्वविद्यालय के इंदिरा चक्रवर्ती सामुदायिक विज्ञान महाविद्यालय की 1980 पूर्व छात्र सम्मेलन के अवसर पर बतौर मुख्यातिथि छात्राओं को संबोधित कर रहे थे।

मुख्यातिथि प्रो. बी.आर. काम्बोज ने संबोधित करते हुए कहा कि महाविद्यालय की पूर्व छात्राएं देश-विदेशों की प्रतिष्ठित कंपनियों व अन्य संस्थानों में बेहतरीन कार्य कर अपना, परिवार और हकृवि का नाम रोशन कर रही है। इन्हीं के ज्ञान, अनुभव, आत्म-विश्वास, अनुशासन सहित अन्य गुणों की बदौलत विश्वविद्यालय राष्ट्रीय व अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर पहचान बना रहा है। इंदिरा चक्रवर्ती सामुदायिक विज्ञान महाविद्यालय की अधिष्ठाता डॉ. बीना यादव ने सभी का स्वागत कर कहा कि इस सम्मेलन में विभिन्न प्रदेशों से आई पूर्व छात्राओं ने अपने विचार रखकर अनुभव साझा किए।

संक्षिप्त समाचार/संगोष्ठी/कार्यशाला/प्रशिक्षण में सहभागिता

● मत्स्य विज्ञान महाविद्यालय में प्रतियोगिताएं आयोजित

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के मत्स्य विज्ञान महाविद्यालय में मत्स्य पालन के प्रति जागरूक करने व बढ़ावा देने के लिए विभिन्न प्रतियोगिताएं आयोजित की गई जिसमें विभिन्न कॉलेज व स्कूलों के विद्यार्थियों ने भाग लिया। इस समारोह में विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज मुख्यातिथि के तौर पर उपस्थित रहे जबकि कार्यक्रम की अध्यक्षता महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ. नीरज कुमार ने की। प्रो. बी.आर. काम्बोज ने अपने संबोधन में कहा कि विश्वविद्यालय के उन्नत अनुसंधानों के माध्यम से प्रदेश के मत्स्य पालन क्षेत्र को बढ़ाने में उपरोक्त महाविद्यालय की महत्वपूर्ण भूमिका रहेगी। मत्स्य पालन में स्वरोजगार की भी अपार संभावनाएं है। उन्होंने विद्यार्थियों एवं शिक्षकों से आह्वान करते हुए कहा कि वे नीली क्रान्ति को बढ़ावा देने के लिए कारगर कदम उठाएं। मत्स्य पालन के व्यवसाय में बढ़ोतरी करने के लिए भी विभिन्न योजनाओं एवं कार्यक्रमों को प्रभावशाली ढंग से क्रियान्वित किया जा रहा है।

● हकृवि में अश्वगंधा अभियान विषय पर कार्यशाला आयोजित

अश्वगंधा प्रकृति का बहुमूल्य उपहार है। शक्तिवर्धक एवं रोग प्रतिरोधी क्षमता जैसे विलक्षण गुणों से भरपूर होने के कारण इसे 'शाही जड़ी बूटी' की संज्ञा भी दी गई है। आधुनिक युग में इस औषधीय पौधे की बढ़ती मांग को देखते हुए वैज्ञानिकों को अश्वंगधा पर अधिक से अधिक शोध कर इसकी नई किस्में इजाद करें। साथ ही किसानों को अश्वगंधा की खेती कर दूसरों को भी इसके लिए जागरूक करने की आवश्यकता है। ये विचार चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने कहे। वे विश्वविद्यालय के कृषि महाविद्यालय में अश्वगंधा अभियान विषय पर आयोजित कार्यशाला में बतौर मुख्यातिथि संबोधित कर रहे थे। यह कार्यशाला भारत सरकार के आयुष मंत्रालय में राष्ट्रीय औषधीय पादप बोर्ड के सौजन्य से विश्वविद्यालय के अनुवांशिकी एवं पादप प्रजनन विभाग के औषधीय, संगध एवं क्षमतावान फसल अनुभाग द्वारा आयोजित की गई थी। मुख्यातिथि प्रो. बी. आर. काम्बोज ने संबोधित करते हुए कहा कि यूनानी व आयुर्वेद पद्धति में औषधीय पौधों का अति महत्वपूर्ण योगदान है। उन्होंने अश्वंगधा की विशेषताएं बताते हुए कहा कि इस जड़ी बूटी का इस्तेमाल एंटीऑक्सीडेंट, चिंतानाशक, याददाश्त बढ़ाने वाला, कैंसर रोधी, सूजन रोधी सहित अन्य बीमारियों से राहत पाने के लिए किया जाता है। मुख्य वक्ता कृषि महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ. एस.के. पाहुजा ने बताया कि प्राचीन काल से ही अश्वगंधा पर ऋषि-मुनियों ने शोध किए ताकि भावी पीढ़ी को इस औषधीय पौधे के फायदों से लेकर अन्य गुणों के बारे में पता लग सकें। औषधीय, संगध एवं क्षमतावान फसल अनुभाग के प्रभारी डॉ. पवन कुमार ने अश्वगंधा अभियान के तहत विभिन्न प्रतियोगिताएं, कार्यक्रमों व क्रियाकलापों पर विस्तृत रिपोर्ट प्रस्तुत पेश की। वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. राजेश आर्य ने कविता के माध्यम से अश्वगंधा के गुणों का उल्लेख किया।

● 21 दिवसीय रिफ्रेशर कोर्स सम्पन्न

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कीट विज्ञान विभाग में 21 दिवसीय रिफ्रेशर कोर्स संपन्न हुआ। यह कोर्स नई दिल्ली स्थित भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के तत्वाधान में विश्वविद्यालय एवं सेंटर फॉर एडवांस फेकल्टी ट्रेनिंग (सीएएफटी) द्वारा संयुक्त रूप से आयोजित किया गया, जिसका मुख्य विषय 'रिसेंट एडवांसिज इन इकोफ्रेंडली मैनेजमेंट ऑफ क्रॉप पैस्टीसाइट' था। इस कोर्स के समापन अवसर पर विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी. आर. काम्बोज मुख्यातिथि रहे।

● कपास में गुलाबी सुंडी के प्रकोप को लेकर कार्यक्रम आयोजित

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने कहा कि देश के उत्तरी क्षेत्र में लगातार गुलाबी सुंडी का बढ़ता प्रकोप किसानों एवं कृषि वैज्ञानिकों के लिए चिंता का विषय है। इसके समाधान के लिए हमें सामूहिक रूप से एकजुट होकर ठोस कदम उठाने होंगे ताकि किसान को आर्थिक नुकसान से बचाया जा सकें। वे विश्वविद्यालय में हरियाणा, पंजाब, राजस्थान के कृषि क्षेत्र से जुड़े वैज्ञानिक, अधिकारी व निजी बीज कंपनी के प्रतिनिधियों के लिए आयोजित एक दिवसीय सेमिनार को बतौर मुख्यातिथि संबोधित कर रहे थे। इस सेमिनार में कपास उगाने वाले 10 जिलों के किसान प्रतिनिधियों ने भी भाग लिया।

कुलपति ने कहा कि पिछले वर्ष गुलाबी सुंडी का प्रकोप ज्यादा रहा था, जिसके नियंत्रण के लिए अंधाधुंध कीटनाशकों का प्रयोग किया गया जो चिंता का विषय है। इस कीट के नियंत्रण के लिए जैविक कीटनाशक एवं अन्य कीट प्रबंधन के उपायों को खोजना होगा तथा हितधारकों के साथ मिलकर सामूहिक प्रयास करने होंगे। तभी किसान को बचाया जा सकता है। किसान नरमे की बन्छटियों को खेत में न रखें। अगर रखी हुई है तो बिजाई से पहले इन्हें अच्छे ढंग से झाडकर उसे दूसरे स्थान पर रख दें और इनके अधखिले टिण्डों एवं सूखे कचरे को नष्ट कर दें ताकि इन बन्छटियों से निकलने वाली गुलाबी सुंडियों को रोका जा सकें।

● 7 दिवसीय विश्वविद्यालय स्तरीय एनएसएस शिविर का समापन

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में राष्ट्रीय सेवा योजना के तहत आयोजित 7 दिवसीय विश्वविद्यालय स्तरीय एनएसएस शिविर का समापन हुआ। इस अवसर पर विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने मुख्यातिथि के तौर पर कार्यक्रम में शिरकत की। यह शिविर विश्वविद्यालय के छात्र कल्याण निदेशालय की राष्ट्रीय सेवा ईकाई द्वारा आयोजित किया गया था, जिसका मुख्य विषय विकसित भारत 2047 में युवा शक्ति की भूमिका रहा। मुख्यातिथि प्रो. काम्बोज ने अपने संबोधन में कहा कि भारत की सबसे बड़ी ताकत युवा शक्ति है।

सेंटर फार माइक्रोप्रोपेगेशन एंड डबल हेपलोड उत्पादन की प्रयोगशाला का उद्घाटन

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के बायोटेक्नोलॉजी महाविद्यालय में सेंटर फार माइक्रोप्रोपेगेशन एंड डबल हेपलोड उत्पादन की अंतर्राष्ट्रीय स्तर की अत्याधुनिक प्रयोगशाला का उद्घाटन हरियाणा के मुख्यमंत्री मनोहर लाल ने वर्चुअल माध्यम से किया। विश्वविद्यालय में मुख्यातिथि के रूप में हरियाणा विधानसभा के डिप्टी स्पीकर रणबीर सिंह गंगवा रहे व विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने अध्यक्षता की।

हरियाणा के डिप्टी स्पीकर रणबीर सिंह गंगवा ने कहा कि इस विश्वविद्यालय में अंतर्राष्ट्रीय स्तर की प्रयोगशाला का स्थापित होना सौभाग्य की बात है और उन्होंने इसके लिए मुख्यमंत्री का आभार प्रकट किया। इस प्रयोगशाला से किसानों को सीधे रूप से फायदा होगा, जहां से तैयार किए पौधे हरियाणा ही नहीं अपितु उत्तर भारत के किसानों को उपलब्ध करवाएं जा सकेंगे। उन्होंने विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों की प्रशंसा करते हुए कहा कि वे किसानों के हित में शोध कर कृषि क्षेत्र में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं। कुलपति प्रो. बी. आर. काम्बोज ने कहा कि इस प्रयोगशाला का कृषि क्षेत्र में बहुत योगदान रहेगा। हरियाणा प्रदेश के माननीय मुख्यमंत्री श्री मनोहर लाल जोकि किसानों की सेवा के लिए हमेशा से ही तत्पर रहते हैं। इसी दिशा में विश्वविद्यालय में माइक्रोप्रोपेगेशन एंड डबल हेपलोड उत्पादन की अत्याधुनिक प्रयोगशाला स्थापित की गई है। उन्होंने बताया कि यह प्रयोगशाला लगभग 6 करोड़ रुपये में तैयार किया गया है। इस प्रयोगशाला में टिशू कल्चर विधि से विभिन्न पौधे तैयार करने की विधियां विकसित की गई है।

फीडबैक

मीडिया एडवाइज़र

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार- 125 004

दूरभाष : 01662-284330, 289307

ई-मेल : mediaadvisorhau@gmail.com / prohaunews@gmail.com

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय

हिसार- 125 004 (हरियाणा), भारत

(1970 की संसदीय अधिनियम संख्या 16 द्वारा संस्थापित)

दूरभाष : 01662-237720-21, 289502-10

वेबसाईट : www.hau.ac.in

Published by Media Advisor on behalf of CCS Haryana Agricultural University, Hisar. Printed at : ______________000000000000